

## संपादकीय

जब भारत अंग्रेजों के शासन से आजाद हुआ तब से अब तक सुधार एवं विकास की प्रक्रिया जारी है। विकास के रास्तों की स्कावटों को खोज - खोज कर दूर किया जा रहा है। इस प्रयास में सभी भारतीयों ने अपना सहयोग दिया है। प्रश्न यह है कि क्या महिलाएं भी इस सहयोग में शामिल रही हैं? समय-समय पर सर्वे एवं उनसे प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि भारतीय स्त्रियां भारत की आधी आबादी हैं, जब आबादी एवं संख्या आधी है तब योगदान भी आधा होना चाहिए। समय चाहे जो भी रहा हो स्त्रियों ने हमेशा ही पुरुषों के साथ मिलकर काम किया है। परिवार समाज की छोटी इकाई मानी जाती है। परिवार में जहाँ पुरुष का कर्तव्य अर्थोपार्जन रहा है वहीं स्त्री का कर्तव्य परिवार एवं बच्चों की देखभाल है। क्या परिवार सम्भालना एवं बच्चों का पालन पोषण करना समाज के विकास के लिए जरूरी नहीं है? जिन बच्चों की परवरिश स्त्रियाँ करती हैं। वहीं बच्चा बड़ा होकर समाज का नागरिक बन उसके विकास में करता सहयोग है। यह सहयोग प्रत्यक्ष ना होकर परोक्ष है। परन्तु समाज ने इन कार्यों को उतना महत्व नहीं दिया जितना की बाहर जाकर काम करने वाले पुरुष को दिया है। शायद यही वजह कि आज किसी भी क्षेत्र में काम करके पैसा कमाने की उत्सुकता स्त्रियों में बढ़ती जा रही है। जाने अनजाने महिलाएं वह कार्य भी करने को आतुर हैं जो उनके प्रकृति एवं संस्कार से विपरित हैं।

बाबा साहेब भीम राव आम्बेडकर एकमात्र ऐसे विश्वस्तरीय चिन्तक हैं जिन्होंने परिवार और समाज में स्त्री की स्थिति कैसी हो इस पर चिन्तन गहन चिन्तन मनन किया। पुरुषों के साथ स्त्री को भी समानता व स्वतंत्रता मिले, उसे सामाजिक आजादी के साथ आर्थिक आजादी भी प्राप्त हो, परिवार में उसका दर्जा पुरुष के समान हो, इसके लिए उन्होंने दलित गैर - दलित स्त्रियों को समाज परिवर्तन के आन्दोलन में सक्रिय रूप से जुड़ने का आह्वान किया। दोनों जगत यानी घर और समाज में नारी की हीनतर स्थिति को देखकर उन्होंने इस विषय पर खूब सोचा कि भारतीय स्त्री की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन कैसे आयें। यह क्रान्तिकारी परिवर्तन परिवार तथा समाज में नारी को विशेषाधिकार देकर ही किया जा सकता था। डॉ० आम्बेडकर का मानना था कि स्त्री तथा समाज की उन्नति शिक्षा के बिना नहीं हो सकती। सुन्दर और सुशिक्षित व सम्य परिवार के लिए आवश्यक है कि पुरुषों के साथ-साथ घर की स्त्रियाँ भी पढ़ी-लिखी हों ताकि वे समाज परिवर्तन की प्रक्रिया में शामिल हो सकें। इस विचार से यह स्पष्ट होता है कि इससे पूर्व स्त्रियों सामाजिक विकास में योगदान करने की योग्यता ही नहीं रखती थीं। यह विचार इस बात पर भी बल देता है कि योग्य होने के लिए शिक्षित होना आवश्यक है। डॉ०. आम्बेडकर महिलाओं को उसकी समाज द्वारा दी गयी भूमिकाएँ माँ, पली बहन एवं उसके स्त्रियोंचित गुणों के इतर उसको पूर्ण स्वतन्त्र, स्वस्थ एवं प्रगतिशील कर्मण मानवी के रूप में देखते थे। इसलिए उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष जोर दिया है। उनका प्रयास सफल भी रहा। अपने अधिकारों के प्रति अज्ञानता अपने घरेलू श्रम को कम जाने करके आँकना, बचपन में विवाह, विधवा हो पर सामान्य जीवन जीने पर अंकुश आदि ऐसी कुरीतियाँ थीं जिसके कारण उन्हें शिक्षित करना उन्स कालखंड की अनिवार्यता बन गयी। स्त्री शिक्षित हुई। शिक्षा से स्त्रियों का जागरूक होना स्वभाविक था। लेकिन बाहरी स्पेस में उनका काम स्कूल में अध्यापन करने तक ही सीमित रहा। शिक्षा के बाद की दूसरी सीदी आयी उन्हें आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया गया और शिक्षण के आगे, बैंकों में, सरकारी दफ्तरों में, कॉरपोरेट जगत में, प्रशासनिक क्षेत्र में और अन्य क्षेत्रों में स्त्रियों ने अपना योगदान दिया। अब ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ महिलाएं कार्य नहीं कर रही हैं। परन्तु अब भी इसका प्रतिशत बहुत कम है और

कारण महिलाओं का अशिक्षित होना है। आज भी गाँव के सुदूर इलाको में शिक्षा की रौशनी नहीं पहुँच पायी है।

वर्तमान स्थिति को देखकर यह आभास होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी स्त्रियों की भागीदारी बहुत कम है। डॉ. आम्बेडकर का स्त्री शिक्षा को लेकर स्पष्ट मत था कि किसी भी समाज की उन्नति का अनुमान उस वर्ग की महिलाओं की उन्नति को देखकर ही हो सकता है। शिक्षा, स्वच्छता, महत्वाकांक्षा, आत्मविश्वास सीमित परिवार, पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना और बराबरी का अधिकार मांगना नारी के विशेष कर्तव्य है।" अपने अधिकार और कर्तव्य की पहचान के लिए हर स्त्री का शिक्षित होना महत्वपूर्ण है।

शिक्षक एवं स्वयं स्त्री होने के नाते मेरा यह कर्तव्य एवं प्रयास है कि शिक्षा का प्रकाश हर स्त्री के मानसपटल पर पड़े। यह पत्रिका उन सभी पाठकों को समर्पित है जो नारी विमर्श, नारी जीवन एवं नारी शिक्षा के विषय में जानकारी एकत्रित करने एवं उस पर विचार एवं सुधार करने की ओर अग्रसर हैं। आशा मेरी यह पत्रिका इस क्षेत्र में एक दिपक की भाँती मार्ग को आलोकित करने का काम करेगी।

*Kanchan Kaur*  
कंचन कुमारी  
प्रधान सम्पादक